अलफ़ाज़
ग़ज़ल एवं कविता संग्रह
शायर/कवि
मोहसिन आफ़ताब केलापुरी

फहरिस्त / लिस्ट ***पेज नंबर***

सुराः इख़लास

(मंज़ूम तर्जुमा)

कह दो अल्लाह है जो वाहिद है

और अल्लाह बे नयाज़ भी है

ना किसी ने उसे किया पैदा

और न उस ने जना किसी को ही

और हमसर नहीं कोई उसका।

(मुअर्रा नज़्म)

सुराः फ़ातेहा का तर्जुमा

मेरे अल्लाह तू बचा ले मुझे

और ले ले पनाह में अपनी

एक शैतान के हर इक शर से

मेरा आग़ाज़ उस के नाम से है

जो ग़फ़ूर ओ रहीम कहलाये

सारी हमद ओ सना है उसके लिए

जो के हर इक जहान का रब है।

जो के रहमान भी है और रहीम

जो के रोज़ ऐ जज़ा का मालिक है।

बंदगी हम तेरी ही करते हैं

मांगते हैं मदद भी तुझ से ही

रास्ता वो दिखा जो सीधा हो

रास्ता वो के जिस पे हो इनआम

गुमरहि वाला मत दिखा रस्ता

और न उनका के जो हदों से बढे।

ये दुआ है तू इसको कर ले क़ुबूल।

सुराः अल अस्र

(मंज़ूम तर्जुमा)

रब ने खाई क़सम ज़माने की

बेशक इंसान है ख़सारे में

छोड़ कर उनको जो ईमाँ लाये

और उन्होंने किये अमल सालेह

एक दूजे को की वस्सीयत ऐ हक़

और तलक़ीन सब्र की भी की।

_______________-_________________________

सुराः अल-कौसर

(नज़्मबंद तर्जुमा)

हम ने दे दी है आप को कौसर।

(यानी सारी ही नैमतें दे दी)

पस के रब के लिए नमाज़ पढ़ो।

पस के रब के लिए दो क़ुरबानी।

(है बहोत आला आप का रूतबा)

बेशक अबतर है आप का दुश्मन।

____

नात

मुरतज़ा मुस्तफ़ा मरहबा मरहबा।

आप सब से जुदा,मरहबा मरहबा।

है कलाम आप का आफ़रीं आफ़रीं।

आप की हर अदा मरहबा मरहबा।

अव्वलुन,आख़ीरून,ज़ाहिरुन,बातीनुन।

ख़ातिमूल अम्बिया ,मरहबा मरहबा

आप ही हैं फ़क़त ताजदार ऐ अरब।

हैं हबीब ए खुदा मरहबा मरहबा।

मावरा मुफलिसों के हैं बस आप ही।

ताहिर ओ वज़्ज़ुहा मरहबा मरहबा।

आप का नाम लेने से दिल को मिले।

हिम्मत ओ हौसला मरहबा मरहबा।

ग़ज़ल

फ़क़ीरी,बादशाही के उसूलों पर नहीं चलती।

ये वो कश्ती है जो पानी की लहरों पर नहीं चलती।

क़लंदर अपनी मर्ज़ी से कहीं भी घूम सकते हैं।

ज़बरदस्ती कीसी की भी हवाओं पर नहीं चलती।

हमारे दिल को हम समझा बुझा लेते मगर भाई।

जो बच्चें ज़िद पे आ जाएँ तो बच्चों पर नहीं चलती।

मियां,सहरा नवर्दी क़ैस के हिस्से में आयी है।

के लैला फूल पे चलती है शोलों पर नहीं चलती।

मुझे मालूम है मुझ को दुआ से काम लेना है।

दवा तो कोई भी अब मेरे ज़ख्मों पर नहीं चलती।

अदब से पेश आओ ऐ जहाँ वालों दीवानों से।

दीवाने हट गए तो फिर दिवानो पर नहीं चलती।

अभी भी फैसले सारे बड़े बूढ़े ही लेते हैं।

हमारे घर में बच्चों की बुज़ुर्गों पर नहीं चलती।

बुरे दिन जो हैं मेहमाँ ज़िंदगी में चार दिन के हैं।

हुकूमत देर तक शब् की उजालों पर नहीं चलती।

जो चलती है तो बस रब की ही चलती है जहां वालों।

किसी की भी मोहम्मद के ग़ुलामों पर नहीं चलती।

तो हम सब साथ होते खुश भी होते थे बहोत"मोहसिन"।

सियासत की अगर तलवार रिश्तों पर नहीं चलती।

.... ग़ज़ल ....

कुछ नया काम नए तौर से करने के लिए।

लोग मौका ही नहीं देते सुधरने के लिए।

जाओ जा कर के ग़रीबों के दिलों में झाँको।

कितनी बेचैन तमन्नाएँ हैं मरने के लिए।

उस पे मरते होतो फिर दुन्या की परवा कैसी।

इश्क़ होता है मियाँ हद से गुज़रने के लिए।

कोई आसानी से फनकार नहीं बनता है।
मुद्दतें चाहिए इक फ़न को निखरने के लिए।

मुंह उठा कर के फिर आई है ये तौबा तौबा।
शब् जुदाई की मेरे घर में ठहरने के लिए।

किसी दोशीज़ा की ज़ुल्फ़ें ये नहीं किस्मत है।
वक़्त लगता है बहोत इसको संवरने के लिए।

आज इस बात का अहसास हुआ है मुझ को।
ख़्वाब मोहसिन थे मेरे सिर्फ बिखरने के लिए।

ग़ज़ल

मुद्दत से जो बंद पड़ा था आज वो कमरा खोल दिया।
मैं ने तेरे सामने दिल का कच्चा चिठ्ठा खोल दिया।

मुझ से लड़ने वाले सारे मैदाँ छोड़ के भाग गए।
ले कर इक तलवार जो मैं ने अपना सीना खोल दिया।

फूल समझ कर तितली भँवरे उस पे आकर बैठ गए।
बाग़ में जा कर जूं ही उसने अपना चेहरा खोल दिया।

सारे कामो को निपटा कर आधी रात में सोई थी।

भोर भये फिर उठ कर अम्मा ने दरवाज़ा खोल दिया।

मुझ को देख के मेरा जुमला जुं ही उसको याद आया।

उसने जो बाँधा था वो बालों का जुड़ा खोल दिया।

ग़ज़ल

फसादों से उख़ुवत की जड़ें कमज़ोर होती हैं।

बग़ावत से हुकूमत की जड़ें कमज़ोर होती हैं।

गिले,शिकवे,शिकायत,एक हद तक ठीक है लेकिन।

सिवा हों तो मोहब्बत की जड़ें कमज़ोर होती हैं।

फ़लक से तुम ज़मीं पर आओगे मग़रूर होते ही।

ये मत भूलो के शोहरत की जड़ें कमज़ोर होती हैं।

दुवाएं बे असर होती हैं रीज़्के बद को खाने से।

दिखावे से इबादत की जड़ें कमज़ोर होती हैं।

मुसलसल अश्क का बहना मियाँ अच्छा नहीं होता।

नमी हो तो इमारत की जड़ें कमज़ोर होती हैं।

ये फ़िर्क़ा वारीयत अच्छी नहीं होती मेरे भाई।

इसी से ही तो उम्मत की जड़ें कमज़ोर होती हैं।

ये काले कोट वाले जज के जो इन्साफ परवर थे।

ईन्ही से अब अदालत की जड़ें कमज़ोर होती हैं

==

ग़ज़ल ....

एक आवारा सी परछाई का साया मैं हूँ।

तनहा रहती हुई तन्हाई का साया मैं हूँ।

ग़म के सूरज की तपिश इस को ना छु पाएगी।

अपने मासूम से इक भाई का साया मैं हूँ।

खेलती है जो तेरे जिस्म की शाखों से सदा।

देख मुझ को उसी पुरवाई का साया मैं हूँ।

मैं थकन हूँ तेरी रातों के हंसी लम्हों की।

और तेरे जिस्म की अंगड़ाई का साया मैं हूँ।

हकपरस्तों ने अक़ीदत से मुझे चूमा है।

ये है सच्चाई के सच्चाई का साया मैं हूँ।

ग़ज़ल

उदास शाम सा,खाली गिलास की सूरत।

बिछड़ के तुझ से हुवा मैं कपास की सूरत।

बहोत ही जल्द वो मुझ को उतार फैंकेगा।

के उस ने पहना है मुझ को लिबास की सूरत।

मैं उस के वास्ते रस्ते का एक काँटा हूँ।

वो मेरे वास्ते लेकिन है आस की सूरत।

इसी लिए ही बिछड़ कर मैं हो गया आधा।

वो मेरे जिस्म पे रहता था मास की सूरत।

वो मैं ही हूँ,के जो अब उनको ज़हर लगता हूँ!!!

वो मैं ही था,के जो लब पर था प्यास की सूरत।

फलक पे मैं ही तो बखरा हुवा हूँ ए मोहसिन

ज़मी पे फैला हुवा हूँ मैं घास की सूरत।

.... ग़ज़ल ....

पाओं की धूल को दस्तार से लड़ना होगा।

अब ग़रीबों को भी ज़रदार से लड़ना होगा।

जंग तो जीत गया हूँ मैं जहाँ वालों से।

अब मुझे अपने ही घर बार से लड़ना होगा।

गर बसानी है मोहब्बत की नयी दुन्या तो।

ऐ दीवानों तुम्हें संसार से लड़ना होगा।

क्या ख़बर थी,के घडी भर के सुकूँ की ख़ातिर।

धुप में साया ऐ दीवार से लड़ना होगा।

मात खाएंगे जो मैदां से हटेंगे पीछे।

अब हमें जज़्बा ऐ ईसार से लड़ना होगा।

हम ने आपस में लड़ाई तो बहोत कर ली है।

अब हमें मुल्क के ग़द्दार से लड़ना होगा।

जंग दुश्मन से नहीं अपने लहू से हो तो।

तीर ओ तलवार नहीं,प्यार से लड़ना होगा।

रूह को जिस्म से आज़ाद अगर होना है।

हर घडी साँसों की तलवार से लड़ना होगा।

ग़ज़ल

महफ़िल महफ़िल आँगन आँगन, सहरा सहरा जंगल जंगल।

मजनूँ बनकर दर दर भटकूँ, ढूँढू तुझको पागल पागल।

ला ई ला हा इल्लल ला हु की आवाज़ें सुन तो लो।

शाम सवेरे पंछी चहके,बरगद बरगद पीपल पीपल।

उसकी ज़ुलफे काली काली थी ऐसी के जैसे नागन

गाल थे उसके मखमल, जैसे नरम मुलायम कोमल कोमल।

ऐसी सूरत ऐसी सीरत और जहाँ में कोई नहीं।

रूह तुम्हारी पाकिज़ा है ,जिस्म तुहारा संदल संदल।

पत्ता पत्ता बूटा बूटा गलयाँ गलयाँ चप्पा चप्पा।

तुझ को धरती पर ढूंडा है,ढूंढूंगा अब बादल बादल।

____

...... ग़ज़ल ....

ज़ुल्म के हाथ से तलवार गिरानी होगी।

अब तो कुछ भी हो ये सरकार गिरानी होगी।

तोडना होगा तकब्बुर ये तेरा अब हम को।

तेरे सर से तेरी दस्तार गिरानी होगी।

जिसकी तामीर ने रिश्तों के किये हैं टुकड़े।

आज नफरत की वो दिवार गिरानी होगी।

ख़ुद को इस दौर के बाज़ार में रखने के लिए।

आज फिर कीमत ए बाज़ार गिरानी होगी।

धड़कने तुझ को पुकारे ना इसी की ख़ातिर।

दिल की मस्जिद की ये मीनार गिरानी होगी।

ज़ख्म,मरहम से ही अच्छे नहीं होते"मोहसिन"।

इन पे अश्कों की भी बौछार गिरानी होगी।

===

ग़ज़ल

वफ़ा का दर्द ज़बाँ से बयाँ नहीं होता।

ये ऐसी आग है जिस का धुँआ नहीं होता।

बस एक दर्द सा महसूस होता रहता है।

नज़र की चोट का दिल पे निशाँ नहीं होता।

सफ़र ये हिज्र का कटता न जाने फिर कैसे।

तुम्हारी याद का गर सायबाँ नही होता।

हमीं ने खून से लिख्खि है दासतान ए चमन।

पर आज इस में ही अपना बयाँ नहीं होता।

त्रिवेणी

मेरी आँखों को कभी ग़ौर से देखा तूने???!!!

तेरे चहरे के सिवा और कोई चेहरा है???

आईना देख कभी झूट नहीं बोलेगा!!!!

अब ये दिन रात बदल जाएँ तो अच्छा होगा।

मेरे हालात बदल जाएँ तो अच्छा होगा।

भूलना उसको मेरे बस में नहीं है लेकिन।

दिल के जज़्बात बदल जाएँ तो अच्छा होगा।

त्रिवेणी

बन्दे तुझ को किस का डर है।

मस्जिद तो अल्लाह का घर है।

जब जी बोले तब आया कर।

अपने ख़्वाबों को सर ए राह जलाने के बाद।

दर्द छलका है मेरी आँख में आने के बाद।

चुप रहोगे तो तुम्हे लोग मसल डालेंगे।

तुम सुने जाओगे पर शोर मचाने के बाद।

..... ग़ज़ल ....

जिस तरह धुप का रंगत पे असर पड़ता है।

नफ़्स का वैसे इबादत पे असर पड़ता है।

ऐसे मुझ पर भी तेरे ग़म के निशाँ दिखते हैं।

जैसे मौसम का इमारत पे असर पड़ता है।

सिर्फ माहौल से फिकरें नहीं बदला करतीं।

दोस्तों का भी तबीअत पे असर पड़ता है।

दुश्मनों से ही नहीं होता है ख़तरा लाहक़।

बाग़ियों से भी हुकूमत पे असर पड़ता है।

अब समझ आया सबब मुझ को मेरी पस्ती का।

मांग घटती है तो क़ीमत पे असर पड़ता है।

भूक नेकी की लगे या के लगे दुन्या की।

भूक लगती है तो सूरत पे असर पड़ता है।

रिज़्क़ रुकता है नमाज़ों के क़ज़ा करने से।

निय्यतें बद हों तो बरकत पे असर पड़ता है।

साफ़ दिखती है बुढ़ापे में क़ज़ा,सच तो है।

उम्र के साथ बसीरत पे असर पड़ता है।

पास रहने से ही बढ़ती नहीं चाहत"मोहसिन"।

फासलों से भी मोहब्बत पे असर पड़ता है।

..... ग़ज़ल ....

हमारे दिल में यादों को सलीके से रखा जाए।

के इस कमरे में फूलों को सलीके से रखा जाए।

मसीहाई की फिर कोई ज़रुरत ही नहीं पड़ती।

अगर ज़ख्मों पे अश्कों को सलीके से रखा जाए।

दिलों की हुक्मरानी का ये इक अच्छा तरीका है।

हर इक जुमले में लफ़्ज़ों को सलीके से रखा जाए।

अदब है दीन ओ दुन्या है,छुपा है इल्म भी इस में।

मेरे बच्चों किताबों को सलीके से रखा जाए।

तेरा ये घर लगेगा खूबसूरत ए मेरे भाई।

अगर चे सारे रिश्तों को सलीके से रखा जाए।

वो जाने वाला जाने कौन से पल लौट कर आये।

अभी रस्ते पे आँखों को सलीके से रखा जाए।

बरसती है खुदा की रहमतें इनकी दूवाओ से।

घरों में सब बुज़ुर्गों को सलीके से रखा जाए।

ग़रीबी देखती रहती है हसरत से खड़ी होकर।

दुकानों में खिलौनों को सलीके से रखा जाए।

पड़ौसी का भी हक़ है तुझ पे इतना याद रख"मोहसिन"

मुंडेरों पर चराग़ों को सलीके से रखा जाए।

.... ग़ज़ल ....

जिस्म में खूं की रवानी का मज़ा आएगा।

इश्क होते ही जवानी का मज़ा आएगा।

जोश गुफ्तार में कुछ और बढ़ा लो अपने।

तब ही कुछ शोला बयानी का मज़ा आएगा।

ज़िन्दगी की ये कहानी है ज़रा बोरिंग पर।

मौत के बाद कहानी का मज़ा आएगा।

आज हम दोनों नहाएंगे बड़ी शिद्दत से।

आज बरसात के पानी का मज़ा आएगा।

बारिशें वक़्त पे खेतों को हरा कर दें तो।

सब किसानों को किसानी का मज़ा आएगा।

आज तो मूड है महफ़िल भी है"मोहसिन"साहब।

आज अंगूर के पानी का मज़ा आएगा।

.... ग़ज़ल ....

नज़र को भाए जो मंज़र,पहन के निकला है।

धनक वो अपने बदन पर पहन के निकला है।

मैं आईना हूँ मगर पत्थरों से कह देना।

इक आईना है जो पत्थर पहन के निकल है।

वो अपनी आँख की उरयानियत छुपाने को।
हया की आँख पे चादर पहन के निकला है।

छुपा के रखता तो तू भी हवस से बच जाता।
मगर तू हुस्न का ज़ेवर पहन के निकला है।

ज़माना उसको कभी भी डरा नहीं सकता।
खुदा का खौफ जो दिल पर पहन के निकला है।

कुलाह सर पे नहीं मुंसिफ ए ज़माना के।
वो अपने सर पे मेरा सर पहन के निकला है।

ग़ज़ल

इनकेसारि में गुज़ारा तो नहीं होता है।
इस बिमारी में गुज़ारा तो नहीं होता है।

मुझ को दुन्या की तलब है तो नहीं पर साहब।
इस ग़रीबी में गुज़ारा तो नहीं होता है।

ज़िंदा रहना है तो हक़ के लिए लड़ना सीखो।
आहो ज़ारी में गुज़ारा तो नहीं होता है।

ऐसी बस्ती के जहाँ प्यार नहीं नफरत हो।

वैसी बस्ती में गुज़ारा तो नहीं होता है।

मेरा हो जाएगा ; लेकिन मेरे पूरे घर का।

एक रोटी में गुज़ारा तो नहीं होता है।

चाहिए और भी सामान ए हयात ऐ मोहसिन।

सिर्फ झुग्गी में गुज़ारा तो नहीं होता है।

.... ग़ज़ल ....

मेरे अज़ीज़ तुम्हारी दुवा से ज़िंदा हूँ।

ये किस ने बोल दिया मैं दवा से ज़िंदा हूँ।

ये हादसात मेरे हौसले बढ़ाते हैं।

मैं मुश्किलों से ग़मों बला से ज़िंदा हूँ।

बुलाएगा जो मुझे तू तो लौट आऊंगा।

मेरे ख़ुदा,मैं तेरी ही रज़ा से ज़िंदा हूँ।

ख़ुलूस,प्यार,मोहब्बत,वफ़ा,रवादारी।

मैं तेरे शहर की आबो हवा से ज़िंदा हूँ।

शराब बोल के तौहीन इस की मत कीजे।

मैं मुद्दतों से इसी इक दवा से ज़िंदा हूँ।

.... ग़ज़ल ......

जूनून ओ शौक़ का अलबम समेट रखता हूँ।

मैं अपने दिल में तेरा ग़म समेट रखता हूँ।

बस एक तेरी तमन्ना में दम निकलता है।

बस एक तेरे लिए दम समेट रखता हूँ।

बयान किस से करूँ मैं के अपने सीने में।

गुज़रते वक़्त का मातम समेट रखता हूँ

ये बोलते हैं सभी मेरे फन के बारे में।

मैं गुल के जिस्म पे शबनम समेट रखता हूँ।

जो मेरी आँख से निकले हैं अश्क की सूरत।

मैं कागज़ों पे वो नीलम समेट रखता हूँ।

जिगर के ज़ख्म पे "मोहसिन" मैं उनकी यादों का

ये देखो आज भी मरहम समेट रखता हूँ।

........ग़ज़ल......

मैं अपने घर में तनहा हो गया हूँ।

सबब ये है, मैं बूढ़ा हो गया हूँ।

मकाँ जैसे पुराना हो गया हूँ।

मैं खुद अपना ही मलबा हो गया हूँ।

बड़ा जिस दिन से बेटा हो गया है।

ये लगता है मैं छोटा हो गया हूँ।

तू मेरा हो या चाहे ना हो लेकिन।

मैं दिल और जाँ से तेरा हो गया हूँ

उधर चेहरे से शोखी उड़ गई है।

इधर मैं भी तो बूढा हो गया हूँ।

वो मेरे ग़म में पागल हो गई है।

मैं उसके ग़म में आधा हो गया हूँ।

तेरी क़ुर्बत का ही शायद असर है।

मैं बिलकुल तेरे जैसा हो गया हूँ।

.... ग़ज़ल ....

ज़र्द पत्ते हैं तो शाखों से गिरा दे हम को।

बे अदब हैं तो निगाहों से गिरा दे हम को।

हम जो सहरा हैं तो सहरा को तू वुसअत दे दे।

हम नदी हैं तो पहाड़ों से गिरा दे हम को।

हम जो मीना हैं तो फिर हम को लगा होंटों से।

ख़ाली साग़र हैं तो हाथों से गिरा दे हम को।

हम जो खुशबु हैं तो फिर रहने दे हम को कायम।
हम जो शबनम हैं तो फूलों से गिरा दे हम को।

इक सहीफ़ा हैं तो फिर चूम कभी आँखों से।
हम जो आंसू हैं तो पलकों से गिरा दे हम को।

हम पे इलज़ाम नया धर के तू रुसवा कर दे।
और फिर अपनी ही नज़रों दे गिरा दे हम को।

हम के इक पेड़ की सूरत हैं खड़े ए "मोहसिन"।
बोल रब से के हवाओं से गिरा दे हम को।

.... ग़ज़ल ....

हम अपने दिल में यु ग़म का पिटारा बाँध लेते हैं।
मुजाहिद जिस तरह सर पर अमामा बाँध लेते है।

समा जाता है जिस तरहा समंदर सीप के अंदर।
उसी अंदाज़ में हम शेर अपना बाँध लेते है।

ख़फा वो हम से होते हैं तो उस की ये अलामत है।
दरीचों और दरवाज़ों पे पर्दा बाँध लेते हैं।

हमें मरहम की फिर कोई ज़रुरत ही नहीं पड़ती।

के जब ज़ख्मो पे हम तेरा दुपट्टा बाँध लेते हैं।

बहोत से ख़्वाब ऐसे थे जो इन आँखों में टूटे हैं।
अब इन आँखों में उन ख़्वाबों का मलबा बाँध लेते हैं।

तेरा हुस्ने मुजस्सम हम ने देखा तो नहीं लेकिन।
निगाहों में हम अपनी तेरा नक़्शा बाँध लेते हैं।

हम इस्टेशन पे उस को अलविदा कहतें तो हैं लेकिन।
हम अपनी आँख में अश्कों का दरया बाँध लेते हैं।

महारत फिर मुझे फन पर मेरे महसूस होती है।
मेरे मिसरे पे जब उस्ताद मिसरा बाँध लेते हैं।

उम्मीदें बाँध लेता है मेरा दिल भी कुछ इस तरह।
के "मोहसिन"जिस तरह बच्चे घरोंदा बाँध लेते हैं।

.... ग़ज़ल ....

बज़ाहिर खुश हूँ मैं,हँसता हुवा हूँ।
पर अन्दर से बहोत टूटा हुवा हूँ।

ज़माने से नहीं है कोई शिकवा।
मैं अपने आप से रूठा हुवा हूँ।

मुक़द्दर में मेरे विरानियाँ हैं।

मैं इक सेहरा हूँ सो उजड़ा हुवा हूँ।

मोहब्बत की नज़र से देख मुझ को।

तेरी पलकों पे मैं ठहरा हुवा हूँ।

तेरी बरहम लटें सुलझाऊं कैसे?

मैं खुद में ही बहोत उलझा हुवा हूँ।

मुझे आग़ोश में ऐ मौत ले ले।

मैं बच्चे की तरह सहमा हुवा हूँ।

समंदर हो गया मैं रोते रोते।

तुझे लगता है मैं दरया हुवा हूँ।

जहाँ भर में मुझे क्यों खोजता है।

तेरे दिल में ही मैं बैठा हुवा हूँ।

मेरी तखलीक़ मेरा रब करेगा।

अभी मैं चार सु बिखरा हुवा हूँ।

तुझे दिल में मुझे रखना था लेकिन।

मैं तेरी ताक़ में रख्खा हुवा हूँ।

मेरी वुसअत का पैमाना नहीं है।

मैं ता हद्दे नज़र फैला हुवा हूँ।

मुझे आज़ाद ना समझे ज़माना।

मैं अपने जिस्म में बाँधा हुवा हूँ।

मोहब्बत का सहीफा हूँ मैं लेकिन।

मैं कूड़े दान में फेंका हुवा हूँ।

मेरी क़िस्मत में तू लिख्खा हुवा है।

तेरी क़िस्मत में मैं लिख्खा हुवा हूँ।

मेरी दुशवारियाँ आसान कर दे।

मैं तेरी चाह में निकला हुवा हूँ।

रिश्ता......

कल उसने पूछ ही डाला

तुम आख़िर कौन हो मेरेहा????

हमारे दरमियाँ

जो इक तआल्लुक है

जो रिश्ता है

वो आखिर कौन सा है???

नाम क्या है???

कुछ बताओगे????

तो मैं ने कह दिया

रिश्ता वही है दरमियाँ अपने......

जो आँखों का है नींदों से

जो नीदों का है ख़्वाबों से

जो ख़्वाबों का है रातों से

जो रातों का अंधेरों से

अंधेरों का सितारों से

सितारों का फ़लक से है

फ़लक का चाँद सूरज से

जो सूरज चाँद का है इस ज़मीं से

और ज़मीं का पेड़ पौदों से

हवाओं से घटाओं से

घटाओं का बहारों से

बहारों का है फूलों से

जो फूलों का है ख़ुशबू से

जो ख़ुशबू का है भंवरों से

जो भंवरों का है कलयों से

जो कलयों का है काँटों से

जो काँटों का है शाखों से

जो शाखों का जड़ों से है

जड़ों का है जो मिट्टी से

जो मिट्टी का बशर से है

बशर का जो ख़ुदा से है

ख़ुदा का नेक बन्दों से

और उन बन्दों का ईमाँ से

और ईमाँ का अक़ीदत से

अक़ीदत का मोहब्बत से

मोहब्बत का दिलों से है

वही दिल

जो तेरे सीने में है और मेरे सीने में

मोहब्बत जिस के अंदर है

मिहब्बत का हँसीं रिश्ता वही है दरमियाँ अपने

अब इस रिश्ते को कोई नाम देने की ज़रुरत है????

कभी कभी

कभी कभी ये दिल करता है

यादें फिर से ताज़ा कर लूँ

कच्चे ज़ख्मों को फ़िर खुरचूं

चीज़ें फैंकुं , शीशा तोड़ूँ

दीवारों से सर टकराऊँ

घर के इक कोने में छुप कर

ज़ानों पर मैं सर को रख कर

आँखों से आंसू टपकाऊं

आह भरूँ और रोता जाऊँ

रोते रोते तुझे पुकारूँ

कभी कभी ये दिल करता है

वही पुरानी "बुक" फिर खुलूँ

जिस के अंदर तेरा इक ख़त रखा हुआ है।

नज़्म

????

तेरी यादों के चराग़ों को बुझाना होगा!!

क्या मेरी जान तुझे सच में भुलाना होगा??

तेरी जो भी है निशानी वो मिटानी होगी!!

तेरा इक एक मुझे ख़त भी जलाना होगा??

वो जो गुदवाया था मेले में बरस पहले ही।

वो तेरा नाम भी सीने से मिटाना होगा??

ये जो मंगनी की अंगूठी है मेरी ऊँगली में।

क्या मुझे इसको भी दरया में बहाना होगा??

फूल इक तूने दिया था जो मुझे कॉलेज में।

आग की नज़्र मुझे वो भी चढ़ाना होगा??

फ़ोन तुझ को न लगाऊँगा कभी मैं लेकिन।

डायरी से तेरा नंबर भी मिटाना होगा??

इतना बतला दे मुझे तेरी तवज्जेह पाने।

ज़ख्म इक और नया तन पे सजाना होगा??

तू मुझे छोड़ के जाएगी किसी और के साथ।

बात ये सच है मगर सच ये छुपाना होगा??

तूने दे दी है मुझे अपनी मोहब्बत की कसम।

तो तेरा शहर भी अब छोड़ के जाना होगा??

तेरी ख़्वाहिश है यही जान ए तमन्ना तो फिर।

आरज़ुओ का मुझे ख़ून बहाना होगा।।।

नज़्म

कबाड़ ख़ाना

इक दिन अपने कमरे में मैं

बैठा बैठा सोच रहा था।

जितनी हैं बे कार की चीज़ें

सब को आज मैं यकजा करलूं

और कबाड़ी को दे आऊँ।

घर में इक कमरा है जहां पर

बहोत सी चीज़ें पड़ीं हुई हैं।

जिस में

मेरे काम का कुछ भी नहीं है।

इक लाठी है,इक बटवा है

कथ्थे चूने की डिब्या है

कहीं सरौता पड़ा हुआ है

टँगी है कोने में इक छत्री काली काली

जिसको चूहों ने क़तरा है जगह जगह से

इक लकड़ी की कुर्सी भी है

बूढ़ी सी और लंगड़ी लूली।

इस कमरे के इक कोने में

इक चौपाई पड़ी हुई है

अपनी क़िसमत को रोती है।

बिलकुल इसके बाज़ू में ही

बूढ़ा सा इक तख़्त रखा है

कीड़े जिसको चाट रहें हैं।

तख़्त के आगे बिलकुल आगे

चीते की इक खाल पड़ी है

भुंसा भर के रखा हुआ था जिस के अंदर

अब तो वो चूहों का एक मोहल्ला है

कुछ हिरनो के सर भी हैं दीवार पे लटके अब तक

जिनके ऊपर अब चिड़यों ने अपने अपने ताजमहल तामीर किये हैं।

कुछ तलवारें ख़ूँ की प्यासी प्यास बुझाने तड़प रहीं हैं।

इक तोते का पिंजरा भी है

एक सुराही रखी हुई है।

इक बीमार सा हुक्का भी है

खांसता रहता है जो अब

शायद कैंसर ने इसको भी जकडा है।

इक लकड़ी की अलमारी भी कोने में खामोश खड़ी है।

जिस में कुछ बोसीदा कपडे रखे हुए हैं।

इक संदूक है जिसके अंदर कुछ ज़ेवर हैं।

जिनकी क़ीमत अब बाज़ार में कुछ भी नहीं।

कुछ जर्मन और कांसे पीतल के बर्तन भी रख्खे हैं।

एक तिजोरी भी रख्खी है।

जिसको देख के अब तक सारी चीज़ें जलती हैं।

इक ना बीना चश्मा भी है।

इक पगड़ी भी रखी हुई है

कुछ जूते चप्पल भी हैं जो

औंधे चित्ते लेटे हैं।

टूटे फूटे से इक दो हाथ के पंखे भी हैं।

और इक ताक़ में चंद किताबें

भूकी प्यासी चीख रहीं हैं।

इक कोने में कुछ तस्वीरें पड़ी हुई हैं।

मेरे पुरखों की तस्वीरें।

जिनके ऊपर धुल जमी है।

पुरखों की ये शान ओ शौकत

इक कमरे में बंद पड़ी है।

क्या_होगा_???

जो इनके वास्ते देखें हैं उन ख़्वाबों का क्या होगा?

अगर मैं मर गया तो फिर मेरे बच्चों का क्या होगा?

अभी ज़िंदा हूँ सो मैं बोझ इन सब का उठाता हूँ।

हर इक तकलीफ सहता हूँ मगर मैं मुस्कुराता हूँ।

ग़म ओ आलाम से लड़ने की मैं हिम्मत जुटाता हूँ।

मगर जब सोचता हूँ ये तो मैं भी खौफ खाता हूँ।

मेरे जाते ही इन कमज़ोर से काँधों का क्या होगा?

अगर मैं मर गया तो फिर मेरे बच्चों का क्या होगा?

अभी तो खेलने की कूदने की उम्र है इनकी।

अभी दीन और दुन्या सीखने की उम्र है इनकी।

अभी हर बात पर कुछ पूछने की उम्र है इनकी।

अभी हर दिन नयी शै मांगने की उम्र है इनकी।

भला इस कमसिनी में इनके अरमानों का क्या होगा।

अगर मैं मर गया तो फिर मेरे बच्चों का क्या होगा।

ये नादाँ सिर्फ अपने घर को ही दुन्या समझते हैं।

मेरे मासूम बच्चे हैं अभी कितना समझते हैं।

अभी है उम्र जितनी इनकी ये उतना समझते हैं।

कहानी भी समझते हैं ना ये किस्सा समझते हैं।

जो मैं इनको सुनाता हूँ उन अफसानों का क्या होगा?

अगर मैं मर गया तो फिर मेरे बच्चों का क्या होगा?

मेरे माँ बाप पर गोया क़यामत टूट जाएगी।

उमीदों से बंधी है जो ईमारत टूट जाएगी।

मेरे खुशहाल घर पर फिर मुसीबत टूट जाएगी।

ग़रज़ कहना है ये के इनकी हिम्मत टूट जाएगी।

जो मुझ को देख के ज़िंदा है उन आँखों का क्या होगा?

अगर मैं मर गया तो फिर मेरे बच्चों का क्या होगा?

जो मेरे वास्ते घर बार अपना छोड़ आई है।

जो मेरे वास्ते अपनों से चेहरा मोड़ आई है।

मेरी तक़दीर से जो अपनी किसमत जोड़ आई है।

वो जो ज़ंजीर रिश्तों की बंधी थी,तोड़ आई है।

फिर उस ईसार की मूरत के जज़्बातों का क्या होगा?

अगर मैं मर गया तो फिर मेरे बच्चों का क्या होगा?

तू ही नाराज़ होता है मोहब्बत तू ही करता है।

खुदाया जानता हूँ के करामत तू ही करता है।

मुसीबत में हों बन्दे तो हिफाज़त तू ही करता है।

अता,हालात से लड़ने की हिम्मत तू ही करता है।

मगर जो करके बैठा हूँ मैं उन वादों का क्या होगा?

अगर मैं मर गया तो फिर मेरे बच्चों का क्या होगा?

मैं तेरे हुक्म की तामील को गरदन झुकाऊंगा।

मेरा ईमान तुझ पर है,सो ये भी कर दिखाऊंगा।

बुलाएगा अगर मुझ को जो तू ,तो लौट आऊंगा।

मेरे बच्चों को मैं तेरे भरोसे छोड़ जाऊँगा।

पर इनकी आँख से निकले हुए अश्कों का क्या होगा?

अगर मैं मर गया तो फिर मेरे बच्चों का क्या होगा?

जो इनके वास्ते देखें हैं उन ख़्वाबों का क्या होगा?????

____

मैं_उसे_रोक_न_पाया________

मैं उसे रोक न पाया ,

वो मुझे छोड़ गया

झड़ती साँसो का उसे मैं ने हवाला भी दिया

सर्द होती हुई नबज़ें भी उसे पकड़ाईं

उसने ख़ाक होते हुये ख्वाहिशें मेरी देखि

मेरे ख़्वाबों का नगर लूटते हुए भी देखा

मेरी आँखों के बरसते हुए बादल देखे

मेरे गालों पे चमकते हुए अश्कों के सितारे देखे

खुश्क होते हुए होंटों को तड़पता देखा

जलती बोझति हुई आँहों ने दुहाई भी दी

मैं ने सौ तरह से चाहा के उसे रोकूँ

मगर

मैं उसे रोक न पाया

वो मुझे छोड़ गया।

पिछली रात

रात कमरे में ही भटकती रही

नींद भी बे क़रार थी मेरी

ख़्वाब भी उंघने लगे मेरे

मुझ को बिस्तर बुला रहा था बहोत

करवटें देखने लगी रस्ता

और तन्हाई शोर करने लगी

जागते जागते थका मैं भी

और फिर सुबह सुबह बिलखिर

मैं तेरी याद ओढ़ कर सोया।

पांढरकवडा (मेरा शहर)

ऊंची ऊंची फलक को छूती

इमारतें हैं

बड़ी बड़ी हैं कॉलनियाँ

चौड़ी लंबी सड़कें हैं वनवे वाली

बीच में इनके

एल.इ.डी. के बल्ब लगे हैं

ट्रैफिक ही ट्रैफिक है

मोटर गाड़ियों का

और ऊपर से

इंजन,हार्न का शोर भी है

धुंवा धुंवा है सारे मंज़र

कुछ बच्चे और नवजवाँ

मोबाइल से हैं चिपके हुए

बचे हुए जो सब हैं वो

जल्दी में लगे हुए हैं

किसी को फुरसत ज़रा नहीं है

लेकिन कुछ बरसों पहले तक

पांढरकवडा शहर ये मेरा

नहीं था ऐसा

था प्यारा सा गाँव जहां पर

छोटी छोटी कच्ची सिंगल सड़कें थीं

सड़कों के दोनों जानिब

फूटपाथ बने थे

और उनके पीछे थे नीम के घने दरख़्त

जिस पर सुबह ओ शाम परिंदे बैठते थे

चौपालों पर

बड़े बुज़ुर्गों की पंगत बैठा करती थी

घंटों बैठ के बातें करते थे सब लोग

गिल्ली डंडा,क्रिकेट,खोखो,आँख में चोली

खेल थे पहले बच्चों के

अमराई थी

बड़े बड़े थे खेत बहोत सारे

छोटे छोटे घर थे सब के

सब दरया दिल थे लेकिन

कोई हो तहवार मनाते थे मिल कर

ग़म में और ख़ुशयों में सारे

इक दूजे का साथ दिया करते थे

सब थे

अपने अपने मज़हब और अक़ीदों पर क़ाइम

हिन्दू ,मुस्लिम ,सिख ,ईसाई

भाई हुवा करते थे

किसी भी इंसाँ को

इंसाँ से बैर नहीं था

वक़्त ने फिर यूँ करवट बदली

मेरे गाँव ने कर ली तरक़्क़ी

और यहाँ पे आई सियासत

दिलों से जाने लगी मोहब्बत

मेरा गाँव भी शहर बना

और इसकी फितरत बदल गई

सारी रंगत बदल गई

हर इक आदत बदल गई

क़ातिल

डायरी रोज़ बुलाती है मुझे लिखने को

एक मुद्दत से कोई शेर नहीं लिख्खा है

मरे सीने में भी इक दर्द उठा जाता है

तेरी यादें भी बहोत ज़ेहन में चिल्लाती हैं

पेन कागज़ मैं लूँ और कोई नया शेर लिखूं

बैठ जाता हूँ सो मैं डायरी अपनी लेकर

मिसरे लिखता हूँ मिटाता हूँ मैं फिर लिखता हूँ

फैंक देता हूँ फीर उन मिसरों के काग़ज़ को मैं गोला कर के

फिर मेरे कमरे से आहों की सदा आती है

देखता हूँ तो वही सारे अधूरे मिसरे

डस्टबिन में पड़े दम तोड़ रहे होते हैं

मैं पस ओ पेश में पड जाता हूँ उस लम्हा तब

और समझ में नहीं आता है मुझे इतना भी

मैं के शायर हूँ कोई या के कोई क़ातिल हूँ।

जल्द बाज़ी

आज फिर

मैं आफिस से

घर को लेट पहोंचा था

डोर बेल बजाते ही

झटपटा के आई वो

उसने

मुस्कुरा के फिर

बेग हाथ से लेकर

कह दिया के

फ्रेश होजाओ

मैं ने

आप की ख़ातिर

आपकी वो फेवरेट डिश

आज फिर पकाई है

मेरी भूक हद दर्जा बढ़ गई थी

सो मैं ने

आज खाना खाने में

फिर से जल्दबाज़ी की

भूल बैठा के वो भी अब तलक के भूकी है।।।

सनीचर की शब्

सनीचर की शब् जुं ही बिजली हुई गुल

बहोत ज़ोर से उसने पकड़ा मेरे हाथ को और बोली

अँधेरों से डर मुझ को लगता बहोत है

मेरा हाथ थामे रहो

तुम को मेरी कसम है मुझे छोड़ कर अब कहीं भी न जाओ।

मेरे साथ बैठो मेरे पास बैठो

दिलासा उसे मैं भी देने लगा

और कहने लगा के

तुझे छोड़ कर मैं कहाँ जाऊँगा

मैं रहूंगा सदा हाथ थामे तेरा

और फिर दिल ही दिल में ये कहने लगा

काश बिजली यूँही रोज़ जाती रहे

तू मेरे पास ऐसे ही आती रहे।

==

वक़्त

वक़्त बड़ा ज़ालिम है मोहसिन

उम्र को मेरी नोच नोच के खा जाता है

पि जाता है रोज़ तवानाई मेरी

राख मेरे माज़ी की हर दिन

मेरे ही बालों पर लीपता रहता

आँखों में तारीकी झोंकता रहता है

मेरे बदन पे झुर्रियां मलता रहता है

साँसों को दांतों से काटता रहता है

तिल तिल करके मुझको मारता रहता है

वक़्त बड़ा चालाक भी है

आता है कब हाथ किसी के

लेकिन मेरे हाथ लगा तो

इस से इक इक ज़ुल्म का बदला ले लूँगा।

और ख़ुदा के पास इसे पहोंचा दूंगा।

____

ग़ज़ल

मेरे बच्चे बड़े होने लगे हैं।

के ये पौदे बड़े होने लगे हैं।

यहाँ जाहिल को सरदारी मिली है।

यहाँ बौने बड़े होने लगे हैं।

चले जाओ यहाँ से जाँ बचा कर।

यहाँ दंगे बड़े होने लगे है।

बढ़ी है जब से मेरी ज़िम्मेदारी।

मेरे हिस्से बड़े होने लगे हैं।

तू "मोहसिन"कर रहा है आज कल क्या।

तेरे चर्चे बड़े होने लगे हैं।

ग़ज़ल

जो भी शिकवा है गिला है वो बताया भी कर।

फ़ोन मैं तुझ को लगाऊँ तो उठाया भी कर।

हाँ तेरा हक़ है मोहब्बत की ये इक रस्म भी है।

मुझ को तड़पाया भी कर और जलाया भी कर।

घर ही घर में ये रहेंगे तो बिगड़ जाएंगे।

अपने बच्चों को तू बाज़ार घुमाया भी कर।

अपने अहसास के रिश्ते की बक़ा की ख़ातिर।

बात सुन भी ले मेरी और सुनाया भी कर।

ये नया दौर है इस दौर में सब चलता है।

मुझ को मिलने के लिए घर पे बुलाया भी कर।

नाम लिख उसका कभी बहते हुए पानी पर।

उसकी तस्वीर हवाओं पे बनाया भी कर।

भूल मत तुझ को बनाया है ख़लीफ़ा रब ने।

दे अज़ाँ और ज़माने को जगाया भी कर।

दर्द हूँ मैं तेरे दिल का तो दवा ढूंढ कोई।

अश्क़ हूँ मैं तो निगाहों से बहाया भी कर।

मैं तेरे ज़हन में बिखरा हूँ बड़ी मुद्दत से।

अपने कमरे की तरह मुझ को सजाया भी कर।

है बुज़ुर्गों से तुझे अपने मोहब्ब्त तो फिर।

अपनी औलाद को तहज़ीब सिखाया भी कर।

फेसबुक पर ही सदा पोस्ट करेगा मोहसिन??

अपने अशआर ज़माने को सुनाया भी कर।

ग़ज़ल

हवेली, खेत , कारोबार , पैसा माँग लेते हैं !

बड़े होते ही बच्चे अपना हिस्सा माँग लेते हैं !

बुजुर्गों की दुवाओं का सहारा माँग लेते हैं !

क़दम जब लडखड़ाते हैं तो कांधा माँग लेते हैं !

बड़े फय्याज हो तुम शहर भर में है यही चर्चा!

तो फ़िर हम तुम को ही तुम से सरापा माँग लेते हैं !

नयी नस्लों को ये खानाबदोशी मुंह चिढ़ाएगी!

खुदा से इस लिये हम ईक ठिकाना माँग लेते हैं !

कमी बेटी में भी कोई नहीं होती मगर, रब से !

बहोत से लोग है ऐसे जो बेटा माँग लेते हैं

तलब करती है कूछ ऐसे मुझे दुनिया भी अऐ मोहसिन !

के बच्चे जिस तरह कोई खिलौना माँग लेते हैं !

____

.... ग़ज़ल ....

मेरा जो ना हुआ,तेरा हुआ है।

चलो जो भी हुआ अच्छा हुआ है।

क़द आवर शख्सीयत ये याद रख्खें।

ज़मीं से आसमां चिपका हुआ है।

अभी धड़कन मेरी टहरी हुई है।

अभी ये दिल मेरा सहमा हुआ है।

क़ज़ा बस इस लिए तडपा रही है।

कहीं कोई है जो रूठा हुआ है।

इताअत इस की तुम पर लाज़मी है।

पयम्बर ये मेरा भेजा हुआ है।

ज़मीं पर चार सु है इल्म जिसका।

खुदा वो अर्श पर बैठा हुआ है।

वो आयेंगे तो फिर तरतीब देंगे।

मेरा कमरा अभी बिखरा हुआ है।

.... ग़ज़ल ....

जब मैं तुम से दूर नहीं था।

इतना भी मजबूर नहीं था!!!

क्या मिलती बाज़ार में कीमत???

आँसू ....कोहेनूर नहीं था......

आवारा थी किस्मत मेरी.

घर इसको मंज़ूर नहीं था।

तनहा कैसे लड़ता सब से???

वो शेर ए मैसूर नहीं था!!!

वरना सब कुछ छोड़ के आती.

इश्क़ तुझे भरपूर नहीं था.

बोझ न सह पाया फिर दिल क्यों??

ग़म था....कोह ए तूर नहीं था!!!

जो भी था वो शहर था अच्छा।

लेकिन केलापूर नहीं था।

मेरा शहर था अम्न का पैकर।

जो उनको मंज़ूर नहीं था।

मोहसिन निकला कल मसजिद से!!!

नश्शे में तो चूर नहीं था???

ग़ज़ल

तो फिर मैं ज़िंदगी की जंग भी हारा नहीं होता।

मेरे बेटों में गर मेरा ही बटवारा नहीं होता।

तो मुझ को मौत अपने साथ कब का ले गई होती।

अगर जीने का मेरे दिल में ही जज़्बा नहीं होता।

हमें बद्ज़न तू कर जाता अगर अपने तआल्लुक से।

तो होता ग़म तेरे जाने का पर इतना नहीं होता।

मोहल्ले हम अगर आपस में जो तकसीम ना करते।

सियासत का हमारे शहर पर कब्ज़ा नहीं होता।

अमीर ए शहर को जा कर कोई ये बात समझाए।

अदब से बात करने में कोई छोटा नहीं होता।

भला उस घर में फिर अल्लाह की रहमत कहाँ से हो।

बड़े बूढों के रहने को जहाँ कमरा नहीं होता।

मोहब्बत दोस्तों सब को बा आसानी अगर मिलती।

कोई मजनूं नहीं होता कोई रांझा नहीं होता।

तो ये बच्चा भी उनिफार्म में इस्कूल ही जाता।

जो ये बच्चा किसी मज़दूर का बीटा नहीं होता।

क्यों आखिर मसअला कश्मीर का तुम हल नहीं करते।

क्यों आखिर ज़ख्म मेरे मुल्क का अच्छा नहीं होता।

समझदारी दिखाते हम अगर रिश्ते निभाने में।

ज़रा सी बात पर अपना कभी झगडा नहीं होता।

मसाइल ने मेरे रुख से ऐ मोहसिन रौनकें छीनी।

वगरना मैं जवानी में कभी बूढा नहीं होता।

ग़ज़ल

मेरा वजूद बिखरने के बाद सोचेंगे।

वो मेरे बारे में मरने के बाद सोचेंगे।

ख़सारा कितना हुवा इश्क़ की तिजारत में।

ये बात हद से गुज़रने के बाद सोचेंगे।

तुम इब्तेदा तो किसी काम की करो पहले।

ग़लत सहीह तो करने के बाद सोचेंगे।

सितारे तोड़ के लाएं या आसमाँ पे रहें।

नसीब अपना सँवरने के बाद सोचेंगे।

हमारे इश्क़ के क़ाबिल है या नहीं है तू।

तेरा ग़ुरूर उतरने के बाद सोचेंगे।

उजाले बाँध के गठरी में कितने रखने हैं।

सियाह रात से डरने के बाद सोचेंगे।

तुम्हारे हुस्न को तशबिह किस से देनी है।

उमीदें अपनी बिखरने के बाद सोचेंगे।

ग़ज़ल

इक दर्द उठा दिन रात, तुम याद बहोत आये।

अश्कों की हुई बरसात, तुम याद बहोत आये।

था चाँद के चेहरे पर बादल का हँसीं घूंघट

तारों से सजी थी रात, तुम याद बहोत आये।

दुशवार हुई मंज़िल, पुरख़ार हुए रस्ते।

छूटा जो तुम्हारा साथ, तुम याद बहोत आये।

इक आग लगी दिल में, और जलने लगे अरमान

फिर जाग उठे जज़्बात, तुम याद बहोत आये।

तुम ही तो मेरी ख़ातिर, दुन्या से झगड़ते थे।

फिर ज़ुल्म हुए मेरे साथ, तुम याद बहोत आये।

हाथों में तुम्हारा हाथ, हो फिर से तुम्हारा साथ।

मांगी है दुआ दिन रात , तुम याद बहोत आये।

जब हिज्र का मौसम था,जब दिल में मेरे ग़म था

कहनी थी तुम्हे ये बात , तुम याद बहोत आये।

खुशबु के फ़साने थे , कलयों की कहानी थी।

फोंलों की चली थी बात , तुम याद बहोत आये।

फिर बजने लगे नग़मे , रुत आई मिलन की फिर

फिर होने लगी बरसात , तुम याद बहोत आये।

.... ग़ज़ल ....

धरती अम्बर एक बराबर सोना पीतल इक जैसे।

मेरी आँख से देखो ज़म ज़म और गंगाजल इक जैसे।

जैसी करनी वैसी भरनी अंत भला तो सब ही भला।

सब्र हो चाहे मेहनत हो वो दोनों के फल इक जैसे।

तू है मीरा जैसी तो मैं दोस्त सुदामा जैसा हूँ।

कृष्ण के दोनों दीवाने हैं दोनों पागल इक जैसे।

जिस्म तुम्हारा खुशबु खुशबु जिस से मिलो , हो ,वो ख़ुशबू।

आठ पहर हो महके महके तुम और संदल इक जैसे।

इश्क़ इबादत इश्क़ है पूजा इश्क़ दुआ है इश्क़ सज़ा।

इश्क़ तो है इक आग का दरया इश्क़ और दलदल इक जैसे।

ज़ुल्फ़ घटाएँ, आँख पयाले, होंट गुलाबों जैसे हैं।
जिस्म धनक के जैसा उसका आँचल बादल इक जैसे।

सिख ईसाई मुस्लिम हिन्दू भारत माँ की औलादें।
लोहनी क्रिसमस ईद दिवाली ख़ुशी के सब पल इक जैसे।

मोहसिन की तक़दीर में लिख्खा है जब दर दर फिरना तो।
गाँव शहर भी इक जैसे हैं सेहरा जंगल इक जैसे।

ग़ज़ल

इतनी आसानी से फंदे में नहीं आएगी।
तेरी किस्मत तेरे क़ब्ज़े में नहीं आएगी।

इसको किरदार में तुम अपने सजा कर रख्खो।
ये शराफत है ये बटवे में नहीं आएगी।

एहतेराम अपने बड़ों का न करेगा कैसे।
मेरी आदत मेरे बेटे में नहीं आएगी??!!

घर से निकलो तो दुआ घर के बड़ों से ले लो।
फिर बला कोई भी रस्ते में नहीं आएगी।

हक़ बयानी मेरे पुरखों की है दौलत ए रक़ीब।

ये विरासत तेरे हिस्से में नहीं आएगी।

गोलियाँ खा ले दवाख़ाने बदल ले मोहसिन।

ज़िन्दगी अब तेरे झांसे में नहीं आएगी।

ग़ज़ल

फटा कम्बल पहेन कर घूमता था।

मैं कब मख़मल पहेन कर घूमता था।

मैं जब रहता था चौथे आसमाँ पर।

तो इक बादल पहेन कर घूमता था।

सरापा जिस्म ही खुशबु था उसका।

या वो संदल पहेन कर घूमता था।

वो अपने वक़्त का सुलतान था पर।

फटी चप्पल पहेन कर घूमता था।

दुखों से दूर था,अए माँ,मैं जब तक।

तेरा आँचल पहेन कर घूमता था।

फटे कपड़ों में ये जो फिर रहा है।

कभी मख़मल पहेन कर घूमता था।

वही!!जिसकी उतारी तूने इज़्ज़त।

तुझे हर पल पहेन कर घूमता था।

तुम इक दो जाम से इतरा रहे हो।

मैं तो बोतल पहेन कर घूमता था।

तू सहरा खुद पे ओढ़े फिर रही थी।

तो मैं जंगल पहेन कर घूमता था।

वो,जो सच्चाई का पैकर है"मोहसिन"!

फरेब ओ छल पहेन कर घूमता था।

ग़ज़ल

मैं गदागर हूँ तू सुलतान बना ले मुझ को।

घर में इक रात का मेहमान बना ले मुझ को।

फिर सजा लेना अंगूठी में मुझे तू अपनी।

पहले याक़ूत या मरजान बना ले मुझ को।

तेरी अज़मत से चमक उट्ठेगी औकात मेरी।

इक सहीफ़ा है तू जुज़दान बना ले मुझ को।

क़र्ज़ फिर इसका किसी तौर चूका ना पाये।

खुद पे इक ऐसा तू अहसान बना ले मुझ को

फिर जुदा हम को जहाँ वाले न कर पाएंगे।

ओढ़ ले जिस्म पे शिरयान बना ले मुझ को।

तुझ को दुशवार अगर लगता है मेरा मिलना।

तो दुवा कर के फिर आसान बना ले मुझ को।

पहले तू कर तो सही कोई क़यामत बरपा।

बाद फिर हश्र का मैदान बना ले मुझ को।

मैं तो पत्थर था तेरे दर पे भी रह सकता था।

कब कहा मैं ने के भगवान् बना ले मुझ को।

किस लिए कहते हो अशआर उसी के"मोहसिन"।

उस ने बोला था के दीवान बना ले मुझ को???

............ग़ज़ल..........

ज़रा करीब तुम आओ तो बात आगे बढ़े।

के फासलों को मिटाओ तो बात आगे बढ़े।

लपेट कर के दुपट्टे का कोना ऊँगली में

हया से आँखें झुकाओ तो बात आगे बढ़े।

यूँ छुप छुपा के भला देखने से क्या हासिल।

नज़र नज़र से मिलाओ तो बात आगे बढे।

क्यों हम को देख के रुख पर नक़ाब डालो हो।

हमें भी जलवा दिखाओ तो बात आगे बढे।

ये माना हम ने के अनजान हैं अभी हम तुम।

हमें तुम अपना बनाओ तो बात आगे बढ़े।

.... ग़ज़ल .. ..

सारे बे-रंग मकानों को नया रंग दिया।

हम ने बोसीदा ख़यालों को नया रंग दिया।

हम ने हर रोज़ अंधेरों पे सियाही पोती।

हम ने हर रोज़ उजालों को नया रंग दिया।

हम ने ही राह दिखाई है तुझे मंज़िल की।

हम ने ही तेरे इरादों को नया रंग दिया।

आप के दिल में जगाई है मोहब्बत हम ने।

हम ने ही आप के ख़्वाबों को नया रंग दिया।

अपने होंटों के धनक रख के तेरे होंटों पर।

हम ने कल शब् तेरे होंटों को नया रंग दिया।

हम ने खुद राह में अपनी ही बिछा कर कांटें।

अपने इन पाऊं के छालों को नया रंग दिया।

अपने हाथों से लहू दिल का लगा कर हम ने।

तेरी तसवीर के रंगों को नया रंग दिया।

ख़ाक उड़ाई है तेरे हिज्र में हर दिन हम ने।

और रोते हुए रातों को नया रंग दिया।

वरना बे नूर पड़े रहते किसी कोने में।

शुक्र उसका , के सितारों को नया रंग दिया।

हम ने ही शेर को मफ़हूम नए बख़्शे हैं।

हम ने ही देख लो ग़ज़लों को नया रंग दिया।

____-___--________________________________

____